ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक शुल्क 50/- रु.
आजीवन 500/- रु.
इस अंक का मूल्य 5/- रुपये

आर्य प्रेरणा

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक मुख-पत्र)
दूरभाषः 011-25760006 Website - www.aryasamajrajindernagar.org
वर्ष-9 अंक 1, मास अप्रैल 2018 विक्रमी संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195 सृष्टि संवत् 1960853119 सम्पादक आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

आर्यसमाज की स्थापना

- भद्रसेन

आर्यसमाज एक धर्मप्रचारक संगठन है। हाँ, आर्यसमाज धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक क्षेत्रों में स्वतन्त्र रूप से कार्य करता है क्योंकि आर्यसमाज की दृष्टि से ध र्म केवल यज्ञ-पूजा-पाठ, जप-तप, ध यान-कीर्तन, व्रत-तीर्थ जैसे धार्मिक कर्मकाण्ड का ही नाम नहीं है। अपितु इसके साथ मुख्य रूप से धर्म-वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन को अच्छा बनाने वाले सत्य, संयम, स्नेह, ईमानदारी आदि गुणों का नाम है। तभी तो कहा है- 'आचारः परमो ध र्मः' मनुस्मृति 1,108

आर्यसमाज की स्थापना 1875 में महर्षि दयानन्द ने की थी। वे अपने गुरु ब्रह्मर्षि विरजानन्द दण्डी द्वारा दी गई प्रेरणा के अनुसार जन-जागरण और जन-हितार्थ आर्षज्ञान की ज्योति को जगमगाना चाहते थे क्योंकि जब स्वामी दयानन्द विदा लेने के लिए गुरुचरणों में पहुंचे, तो गुरु ने स्वामी दयानन्द के जीवन की दिशा बदल कर आर्षज्ञान की ज्योति प्रज्वलित रखने का कार्य सौंपा। इस कार्य को महर्षि दयानन्द ने आगरा से आरम्भ किया। कुछ वर्षों के अनुभव के पश्चात महर्षि ने लक्ष्यसिद्धि की साधना को एक सुनिश्चित रूप दिया। यह सुनिश्चित रूप ही आर्यसमाज के रूप में सामने आया।

इस पर स्वाभाविक प्रश्न उभरता है, कि महर्षि दयानन्द कौन थे? और ऐसे विचित्र गुरु के पास वे कैसे पहुँचे? क्योंकि अधिकतम गुरु अपने शिष्यों से अपनी गुरु गद्दी संभालने की ही बात करते हैं। जबकि ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द दण्डी जी ने जनता जर्नादन की भलाई के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से आर्षज्ञान की ज्योति जलाने का संकल्प धारण कराया।

जीवनगाथा - स्वामी दयानन्द सरस्वती का बचपन का नाम मूलशंकर था। 1824 में शिशु मूलशंकर का जन्म गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम में हुआ था। मूलशंकर का 13 वर्ष तक का बालपन दूसरे बालकों की ही तरह बीता। 1838 में शिवव्रत की महिमा सुनकर और पिताजी की प्रेरणा पर शिवरात्रि का व्रत रखा और जागरण किया। तब वहां एक ऐतिहासिक घटना घटी। घटनाजन्य विचारों में उलझे मूलशंकर ने अपने पिताजी को जगाकर मन में उभरे प्रश्न पूछे। पिता जी के उत्तरों से मूल के मन को सन्तोष न हुआ, हाँ- यह सुनते ही, कि यह सच्चा शिव नहीं है। कुमार मूल ने मन में सच्चे शिव के दर्शन की प्रतिज्ञा की। एक दिन नाटक देखते-देखते ही बहन की मृत्यु की सूचना मिली। मूल के जीवन में मौत की यह पहली घटना थी, अतः मूल कुछ न समझ सका, वह केवल परिणाम की विहलता को ही देखता रह गया। कुछ वर्ष बाद जब प्रिय चाचा का देहान्त हुआ, तब मूल को पता चला कि मृत्यु अपनों को छीनकर उन की परिचित और छत्रछाया से किस प्रकार वंचित कर देती है।

इस प्रकार पहली गांठ के साथ दूसरी मृत्यु का मर्म जानने की जिज्ञासा भी आकर जुड़ गई। इन गांठों की उधेड़बुन में उलझे मूल को उन दिनों जो भी विद्वान, साधु मिला, उसी के सामने अपनी जिज्ञासा रखी। सभी ने योगाभ्यास से इन की सिद्धि बताई। समीपवर्ती पाठशाला में पढ़ते हुए मूल ने जब अपनी विशेष जिज्ञासायें हल करनी चाहीं और योग सीखने की इच्छा प्रकट की, तो पढ़ाने वाले ने युवक मूल के पिता को सजग कर दिया।

घर में जब विवाह की तैयारियां हो रही थीं, तो एक दिन इक्कीस वर्षीय मूल योग सिखाने वाले गुरु की खोज में घर से निकल गया। इस खोज में मूल से पहले शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बनकर लगातार चौदह वर्ष लगा दिए। तब योग के रूप में जिसने जो सिखाया तथा शास्त्र के नाम पर जो पढ़ाया, सो ग्रहण किया। अन्त में मथुरा पहुंच कर लगभग तीन वर्ष विशेष रूप से अष्टाध्यायी और

'आर्य-प्रेरणा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महाभाष्य का अध्ययन किया।

विदा की बेला में गुरु जी ने सच्चे शिवदर्शन तथा मृत्यु विजयार्थ की जाने वाली साधना को परोक्ष में कराकर आर्षज्ञान का दीप जगाने का जीवनोद्देश्य धारण करा दिया। इस ज्ञानदीप को जगाते हुए ऋषि दयानन्द भारत के एक नगर से दूसरे नगर पहुंचे और इस दीप को सदा प्रज्ज्वलित रखने के लिए आर्य समाज की स्थापना की।

नाम विचार – आर्यसमाज का आर्य शब्द इस संगठन के उद्देश्य, कार्यों, सिद्धांतों, पद्धति को स्पष्ट कर देता है। इसलिए जीवन और समाज में आर्यता लाना अर्थात् अपने तथा दूसरों के जीवन में आर्यपन उभारना ही आर्यसमाज का कर्तव्य है। **अतः जहां भी, जो भी, जैसा भी, जितना आर्यत्व है, वह इसके लिए मान्य है। यतोहि– सारे मान्य साहित्य में आर्य शब्द का प्रचुर प्रयोग होता है और सर्वत्र इस का अर्थ गति और श्रेष्ठ, अच्छा, भला ही मिलता है। 'कर्तव्यमाचरन् कम–'** अर्थात करने योग्य को करने वाला ही आर्य कहा जाता है तथा **'अकर्मा दस्यु अभि जो अमन्तु अन्वव्रतो अमानुषः '** ऋग्वेद, 10,22,8 अर्थात जो दस्यु की तरह अकर्मण्य, आलसी, निन्दित कर्मकर्ता और अविचारशील नहीं है– वह आर्य है। क्योंकि दस्यु को आर्यशब्द से विपरीत अर्थ वाला माना जाता है। शास्त्रों के अनेक प्रमाणों से आर्य शब्द का अच्छा अर्थ ही परिपुष्ट होता है।

आर्यता – अच्छाई ही हर व्यक्ति हर क्षेत्र में चाहता है, अतः आर्यशब्द प्रत्येक की अभीष्ट चाहना का बोधक है। इसीलिए जो भी, जहाँ भी, जब आर्यशब्द का प्रयोग करना चाहे प्रयोग कर सकता है। काल, देश, वर्ग की सीमा इसमें बाधक नहीं बनती। अर्थात आर्य शब्द सार्वभौमिक, सार्वकालिक तथा सार्वजनिक भावनाओं का वाचक है।

इस विवेचना से स्वतः स्पष्ट हो जाता है, कि आर्यशब्द किसी प्रदेश, वर्ग, भाषा तथा काल की सीमा से सीमित नहीं है। अतः हर काल, देश, भाषा की आर्यता, सत्यता, तत्सम्बद्ध शास्त्रवचन यहां स्वीकार्य है। इसीलिए आर्यसमाज का चतुर्थ नियम है– 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य से छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' हां, इस नियम का तृतीय के साथ संगतिकरण करने से सत्य–वेद का भी संकेत करता है तथा सत्य स्वतंत्र रूप से भी ग्राह्य है। जैसे अपने मान्य ग्रन्थ की सचाई हमें स्वीकार्य है, ऐसे ही सभी को वेद की सचाई भी स्वीकार्य होनी चाहिए।

इस दृष्टिकोण से निम्न विवेचन विशेष विचार्य हैं, क्योंकि उन्नीसवीं–बीसवीं शताब्दी में अनेक धर्मप्रचारक संगठन सामने आए। वे अपने–अपने शास्त्रों के विचारों की सचाई तक ही सीमित होकर चल रहे हैं, पर वे वेद की स्पष्ट सत्य प्रतीत होने वाली बातों को भी अपने यहां उद्धरण रूप में नहीं लेते और प्रमाणरूप में प्रस्तुत नहीं करते हैं। आर्यसमाज का उनसे एक स्पष्ट अन्तर यह भी है, कि आर्यसमाज प्राचीनतम वेद आदि शास्त्रों के साथ औरों की सचाई को भी उदधृत करता है तथा प्रामाणिक मानता है। प्राचीनतम होने से वेदादि को नकारता नहीं है औश्र न ही अन्यों की सचाई को लेने से हिचकता ह। अतः जो भी सत्य है, उस को बिना पक्षपात के सहर्ष स्वीकार करता है।

सचाई को प्रमुखता देने के कारण आर्यसमाज व्यक्ति को प्रमुखता न देकर सत्य सिद्धांतों, विचारों और किसी को उसके कार्यों के सत्यानुरूप ही महत्त्व देता है अर्थात व्यक्तित्व, कृतित्व के आधार पर प्रतिष्ठा देता है। संगठन को व्यक्ति विशेष तक सीमित नहीं करता, क्योंकि जैसे कोई व्यक्ति शारीरिक, मानसिक दृष्टि से सीमित होता है। अतः उसका बल, ज्ञान, कार्य भी सीमित होते हैं। संगठन में किसी (किन्हीं) व्यक्ति विशेष को महत्त्व देने से अन्यों की अपेक्षा हो जाती है। यह स्पष्ट पक्षपात है। पक्षपात के कारण अनुयायी व्यक्ति विशेष से बन्ध जाने के कारण उसी के विचारों तक रूढ़ हो जाते हैं तथा हठधर्मी बन जाते हैं। स्थिति यहां तक पहुंच जाती है, कि उन विचारों की तुलनात्मक समीक्षा और दूसरों के सम्बन्ध में सोचने के लिए तैयार नहीं होते। जैसेकि व्यक्तिवादी संस्थाओं में देखते हैं, वे अपने अगुवा से ही हर बात को शुरू करते हैं। उसी के आधार पर ही प्रत्येक कार्य, बात की चर्चा तथा जांच करते हैं। उस व्यक्ति विशेष से पूर्ववर्ती इतिहास, साहित्य पर ध्यान ही नहीं देते हैं।

आर्यसमाज के लक्ष्य, विचारों, प्रक्रिया का बोधक आर्य शब्द जहां व्यक्ति तथा समाज की हर भलाई, विकास का संकेत करता है, वहां इस के साथ सम्पृक्त समाज का शब्द यह भाव देता है, कि समझदारों के समूह, संगठन का नाम ही समाज है और समझदारों का संगठन सदा ही सूर्य आदि की तरह नियमों के अनुसार ही अपना प्रत्येक कार्य करता है। किसी संगठन के नियमबद्ध सदस्य सदा सामाजिक कार्यों में संगठन को ही प्रमुखता देते हैं। इसीलिए आर्यसमाज के दसवें नियम में कहा है– **'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।'**

संगठन प्रक्रिया – आर्य समाज की कार्य प्रणाली लोकतन्त्रात्मक है। स्थानीय सदस्य अपने में से अधिकारियों का निर्वाचन करते हैं, जो कि संगठन की स्थानीय व्यवस्था चलाते हैं। स्थानीय आर्यसमाजों के प्रतिनिधि ही प्रान्तीय स्तर पर अपनों में से प्रान्तीय अधिकारियों का निर्वाचन करते हैं। वे निर्वाचित अधिकारी प्रान्तीय स्तर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से प्रान्तीय संगठन के कार्य को चलाते हैं। विभिन्न–विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधि आगे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए अधिकारियों का निर्वाचन करते हैं। वे अधिकारी सार्वदेशिक स्तर पर व्यवस्था चलाते हैं।

इस प्रकार तीन स्तरों पर निर्वाचित सदस्य संगठन की व्यवस्था और प्रचार के कार्य करते हैं। इस प्रकार आर्यसमाज धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक क्षेत्रों मे कार्य करने वाला संगठन है। हां, अनेक शिक्षणालय, औषधालय और हस्तकला केन्द्र चलाए जा रहे हैं, वहीं बाढ, भूकम्प आदि प्राकृतिक विपदाओं के समय आर्य समाज पीड़ियों की सहायता करता है।

विचारों का प्रचार और सामाजिक सुधार सदा स्थानीय और सामाजिक सुधार सदा स्थानीय स्तर पर ही होता है। अतः स्थानीय कार्यकर्ता तथा रूचि रखने वाले अधिक सहायक होते हैं। संदेश संचार के चाहे आज कितने ही माध्यम हैं, पर व्यक्तिगत सम्पर्क नई सोच उभारने में अधिक सार्थक होता है।

– 182, शालीमार नगर,
होशियारपुर

सम्पादकीय

–आचार्य गवेन्द्र

महर्षि दयानन्द जी के कार्य-क्षेत्र में आगमन से पूर्व देश परतन्त्रता-पाश में जकड़ा हुआ था। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परन्त्रताओं में बद्ध मानव भ्रम-अविद्या जनित नाना प्रकार के अज्ञानान्धकार से आच्छादित था। उन्होंने वेद-सूर्य के प्रकाश से समस्त विश्व को आलोकित किया। उनका प्रयास शिथिल न हो, वैदिक ज्ञान जन-जन तक पहुंचकर प्राणिमात्र का मार्गदर्शन भविष्य में भी करता रहे, इसके लिए उन्होंने श्रेष्ठ पुरुषों को आहूत कर, उनका एक संगठन बनाया और उसे नाम दिया 'आर्यसमाज'। इस संगठन के लिए उन्होंने जो नियम निर्धारित किए, उसमें सामाजिक-धार्मिक सुधार के साथ-साथ प्राणिमात्र के उपकार की भावना को प्रधानता प्रदान की। आर्यसमाज के छठे नियम में ऋषि ने स्पष्ट कहा-

"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना"।

उन्नति का यह मार्ग अनवति के समस्त स्रोतों को समाप्त किए बिना सम्भव नहीं था। उन्होंने इस संसार की धार्मिक (साम्प्रदायिक) और व्यावहारिक बुराईयों के उन्मूलन का व्रत लेकर, वेद को माध्यम बनाकर कार्यक्षेत्र में प्रवेश किया। नाना पुराणों और साम्प्रदायिक धर्मग्रन्थों में उलझे लोगों को उन्होंने समझाया कि-वेद ही ईश्वर की वाणी है। सभी सम्प्रदायों में जो श्रेष्ठ बातें हैं, वे सब वेदों में पहले से ही विद्यमान हैं। उन्होंने सम-सामयिक वेद विरोधी साम्प्रदायिक लोगों का आह्वान किया कि सब लोग जिन श्रेष्ठ विचारों पर सहमत हों, एक मत होकर विश्व कल्याण के लिए उनका प्रचार-प्रसार करें, साथ ही अपनी पूर्वाग्रही साम्प्रदायिक मानसिकता का जगद्हिताय परित्याग कर दें।

उनके इस आत्म-निवेदन का जितना प्रभाव पड़ना चाहिए था, नहीं पड़ा। फलतः वे एकाकी ही इस भगीरथ प्रयत्न में समर्पित रहे। सुधार कार्य में चिरस्थायी प्रगति के लिए उन्होंने समग्र देश का भ्रमण करते हुए वैदिक दुन्दुभि का उद्घोष किया। साथ ही इसमें विशेष मार्गदर्शन के लिए महर्षि ने तीन अद्भुत ग्रन्थों की संरचना की। ये सभी ग्रन्थ देखने में तो अलग-अलग लगते हैं, किन्तु हैं सब एक दूसरे के पूरक। और इनका उद्देश्य भी एक ही है मानव मन में समाये हुए भ्रमजाल को समाप्त करके उसे वैदिक ज्ञान-विज्ञान, व्यवहार से संयुक्त करना। इन ग्रन्थों में यह प्रयत्न किया गया है कि मानव जीवन में उन्नति प्राप्त करने के लिए किस प्रकार के उपाय किए जाने चाहिए?

बच्चों के अन्दर किस प्रकार के संस्कार विकसित हों, जिससे वे बड़े होकर स्वयं के साथ-साथ सबके लिए उपयोगी सिद्ध हों। माता-पिता-आचार्य बालकों को किस प्रकार शिक्षा दें। उनके पाठ्यग्रन्थ क्या होने चाहिएं। किस प्रकार के ग्रन्थों को पढ़ने से बालक वैदिक परम्परा से हटकर साम्प्रदायिक जंजाल में फंस जाता है। इन सब विषयों का उल्लेख महर्षि जी ने अपने रचित ग्रन्थों में विस्तारपूर्वक किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् यदि देश में आर्ष-शिक्षा प्रणाली के अनुसार विद्यालय चलाये जातें, तो आज देश-समाज का स्वरूप कितना हर्षप्रद होता, सोचकर ही व्यक्ति का मन मयूर मुदित हो जाता है।

आर्ष-शिक्षा पद्धति और आर्यसमाज की विचारधारा की अनुकूलता से ही भारत सहित समस्त विश्व का कल्याण संभव हो सकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपना सम्पूर्ण जीवन इसके लिए समर्पित किया। आर्ष शिक्षा और आर्यसमाज की स्थापना के पीछे महर्षि का यही उद्देश्य था कि सम्पूर्ण विश्व का कल्याण व उपकार किया जाए। यह कार्य ऐसे लोगों द्वारा ही सम्भव है, जो सत्यविद्यादि गुण-युक्त उत्तम गुण-कर्म-स्वभाव वाले धर्मात्मा और परोपकारी हों। इन्हीं श्रेष्ठ गुण वालों को महर्षि जी ने 'आर्य' माना है और ऐसे आर्यों के संगठन को ही 'आर्यसमाज' कहा है।

अर्वाचीन भारत की घटनाओं और परिस्थितियों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि महर्षि जी को अपने उद्देश्य में पर्याप्त सफलता मिली है। विगत वर्षों में जो सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलते हैं, देश में जो जागृति आई है, धर्म-समाज और राष्ट्र में जो सुधार हुए, उनका एकमात्र श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है, तो वह महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज ही है। लेकिन इस दिशा में अभी बहुत कर्त्तव्य शेष हैं, जो लक्ष्य के लिए समर्पित आर्यजनों द्वारा ही कर पाना सम्भव है। महर्षि जी ने 1875 ई. में आर्यसमाज की स्थापना की और 1883 ई. में उनका शरीरापात् हो गया। इन साढ़े आठ वर्षों के अल्पकाल में उनका मार्गदर्शन अप्रतिम है। आर्यसमाज को पुनः अपने उसी क्रान्तिमय स्वरूप को धारण करना होगा, तभी महर्षि दयानन्द जी के ऋण से हम उऋण हो सकेंगे। मानव समाज का सम्पूर्ण भाग्योदय उनकी इस विचार-वाटिका के संरक्षण और संवर्द्धन से ही संभाव्य है।

हार्दिक शुभकामनाएँ

आर्य नेता, कर्मठ समाज सेवी, महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त, महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त, सफल व्यवसायी, कर्मयोगी, दानवीर भामाशाह, करुणा की प्रतिमूर्ति, सेवा को अपने जीवन का आदर्श समझ कर इद्न्न मम् की भावना को अपने जीवन का आधार बनाने वाले हम सबके प्रेरक, समाजोत्थान के लिए कार्यरत, अनेक संस्थाओं के जनक तथा पूर्तिदाता, गौभक्त, वेद भक्त, यज्ञीय भावना के धनी, चिर युवा महाशय धर्मपाल जी के 95वें जन्मदिवस पर आर्य समाज राजेन्द्र नगर और आर्य प्रेरणा मासिक मुख पत्र की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

- नरेन्द्र मोहन वलेचा, मंत्री

अनमोल रत्न स्व. विवेक सहगल

सदा मुस्कुराता हुआ फूल सा खिला उसका सुन्दर और सुडौल शरीर वाला चेहरा आज स्मृति शेष है। इसे विधि की विडम्बना कहे या प्रकोप। यह बात भी अब अपनी समझ से बाहर हो गई है। परन्तु शास्त्र दर्शन हमें बताते है कि आयु-योनि और भोग जीव अपने कर्मों के आधार पर प्राप्त करता है। मनुष्य का प्रियतम चोला प्रिय स्वामी विवेक सहगल को मिला और जीवन के सभी योग्य पदार्थ भी उसे सुलभ थे। सारे सुख साधन उनके कदमों पर न्योछावर थे।

धर्मपरायण राष्ट्र भक्त सरल स्वभाव समाज सेवा दानी और यशस्वी माता-पिता की गोद भी उसे प्राप्त हुई आस्था और श्रद्धा के संस्कार अपने पूज्य पिता जी श्री अशोक सहगल जी माता सुनीता जी सहगल से जन्म के साथ घुट्टी में ही मिले थे। आयु का एक श्वास भी बढ़ाया नहीं जा सकता। मृत्यु कोई न कोई बहाना लेकर आती है और शरीर को दबोच लेती है। सारे बन्धु माता-पिता मित्र और प्रियजन असहाय होकर देखते खड़े रह जाते हैं। जिन्दगी एक किराये का घर है।

इक ना इक दिन बदलना पड़ेगा ।
मौत जब हमको आवाज देगी।
छोड़कर घर से निकलना पड़ेगा ।।

मनुष्य के अपने हाथों में होता तो किसी प्यार से बिछुड़ता ही क्यों? परन्तु इसे ईश्वर की इच्छा कह कर सबको स्वीकार करना पड़ता है। आत्मा नया शरीर धारण करती है। यह भी सत्य है परन्तु पूरी आयु को करके जाना तो सहन हो जाता, कोई यात्रा में अपने संगी साथियों को माता-पिता, भाई-बहन सब बन्धुओं को असमय छोड़कर चला जाए तो कौन है जो केवल उपदेश के सहारे अपने आसुओं को रोक पायेगा। भगवान् कृष्ण जी ने हमें आत्मा की अमरता का उपदेश दिया सारी गीता ज्ञान का सागर है। परन्तु अपने आत्मज जिसको रुक्मणी के साथ बारह वर्ष तक घोर तपस्या के बाद पुत्र प्रद्युम्न प्राप्त किया था। जब अपनी आँखो से उसकी मृतक देह को देखा तो हतप्रभ रह गये और हा प्रद्युम्न उनके भी मुख से निकला। श्री कृष्ण को एकदम वैराग्य हो गया और वन में चले गये वृक्ष के नीचे लेटे हुए उनके पैरों में मृग जैसी कान्ति को देखकर व्याघ ने उनको मृग समझ लिया और ऐसा विष बाण छोड़ा जिससे भगवान् श्री कृष्ण के शरीर का भी अन्त हो गया। श्रीकृष्ण अपने सुकर्मों के यश के कारण आज भी हमारे पूज्य हैं।

जीवन के आदर्श और प्रेरणा स्रोत हैं। हिन्दू जाति के लिए श्री कृष्ण के अमृतमय जीवन में सुकर्मो की पूंजी सबसे बड़ी पूंजी है। यही जीव को इकट्ठी करनी चाहिए। प्रिय भाई विवेक सहगल जी से मेरा परिचय प्रथम बार आर्य समाज राजेन्द्र नगर के वार्षिक उत्सव पर हुआ। तो मैं उनकी भावनाओं को देखकर काफी प्रभावित हुआ। उनके मन में गरीब जनता के प्रति काफी सहानुभूति देखी और कार्य करने की लगन इतनी थी कि आर्य समाज का कोई भी कार्यक्रम होता था तो बड़ी श्रद्धा व सेवा भाव से दिन रात व्यवस्था में लगे हुए थे। विवेक जी उन सब में आगे थे।

परिचय होने पर जब पता चला कि वे कर्मठ समाज सेवी प्रधान जी के सुपुत्र हैं। विवेक जी की लोक-प्रियता का पता चलता था। हजारों लोगों का चहेता उन्हें अचानक छोड़ गया था। वास्तव में इंसान की कीमत उसके जाने के बाद ही पता लगती है। इसको शब्दों या सिक्कों में तोल पाना अति कठिन है। उन्होंने अपने अल्प जीवन-काल में ही सेवा व परोपकार के कार्यों से जो प्रतिष्ठा व सम्मान पाया वह शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। यह किसी को भी आभास न था कि ऐसा उदीयमान युवक जो सम्पूर्ण समाज के लिए गर्व करने योग्य था अचानक इस भरी महफिल से उठ कर चला जाएगा। जाने वाले लौट कर नहीं आतें।

जाने वालों की याद आती है। प्रिय विवेक की मीठी-मीठी याद आती ही रहेगी और हम महफिल में हर कारवां में उसे आंखे देखने की कोशिश करेंगी ।

हजारों महफिलें होगीं हजारों
कारवां होगे।
ये आँखे तुमको ढूंढेगी न जाने
तुम कहाँ होगे।

-आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

देवोपम भगवान श्रीराम

विश्व के मानचित्र में भारत के अतिरिक्त सभी देशों में मुख्य रूप से दो ऋतुएँ तथा ग्रीष्म एवं शीत ऋतु होती है। हाँ, शीत ऋतु में बर्फीली हवाओं के साथ बर्फ गिरने लगता है, जिसे जल-वर्षा या वर्षा-ऋतु कहा नहीं जा सकता है। दक्षिणी गोलार्द्ध के दक्षिण-पूर्व तथा विषुवत रेखा के पूर्व केवल हमारा देश 'भारत' ही है, जहां प्रतिवर्ष तीन-तीन ऋतुएँ होती हैं तथा ग्रीष्म वर्षा और शीत ऋतु। इन तीनों ऋतुओं के उपखंड भी हैं, जिनकी अवधि। दो-दो माह की होती है। भारत की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार है:-

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतम् नाम भारती यत्र सन्ततिः।।

अर्थ :- समुद्र के उत्तर हिमालय पर्वत के दक्षिण में जो देश है, उसका नाम 'भारत' है, जहाँ (निवास करने वाली) सन्तति आर्य। भारती कहलाती है।

इस देश को विश्व का प्राचीनतम देश कहा गया है। इसके ही सर्वोच्च शिखर त्रिविष्टप् (तिब्बत) पर मानव जाति उत्पन्न हुई, जिन्हें आर्य अर्थात् 'श्रेष्ठ मनुष्य' कहा जाता है। यहीं से वेद और आर्य संस्कृति का दिग् दिगन्त में प्रचार-प्रसार हुआ। इस कारण तिब्बत सहित भारत के हम आदिवासी आर्य-पुरूष हैं, जिनके माध्यम से 'वेद' और 'वैदिक धर्म' का प्रसार हुआ। अब तो 'आर्य' और 'भारती' ये दोनों शब्द रूढ़ नहीं पयार्यवाची हो गये हैं।

इस देश की भौगोलिक रचना और प्राकृतिक ऋतु- परिवर्तन के कारण यहाँ की सामाजिक रचना, पर्व, त्योहार, उत्सव भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। होली, दीपावली, विजयदशमी (दशहरा) आदि पर्व इन्हीं ऋतुओं के कारण निश्चित हैं। सामाजिक प्रथाएँ, संस्कार, संस्कृति आदि की व्यवस्था में इस देश की तीनों ऋतुओं का बड़ा महत्व है। इन्होंने भारतीय जन-जीवन को बड़ा प्रभावित किया है।

समाज शास्त्र के सिद्धान्तानुसार किसी भी देश का भूगोल कभी भी नहीं बदलता अपितु इतिहास बदला करता है। विश्व के इस प्राचीन देश भारत की सभ्यता, संस्कृति, धर्म, दर्शन और इतिहास पर भूगोल का बड़ा प्रभाव है। सम्प्रति, वर्तमान कथित विजया दशमी पर्व वर्षा की समाप्ति तथा शरद-ऋतु के शुभागमन की संधि बेला में प्रतिवर्ष मनाया जाता है।

भारतीय इतिहास के जाज्ज्वल्यमान नक्षत्र भगवान् श्री राम और योगिराज भगवान् कृष्णचन्द हैं। प्रसंगवश, आज हम यहाँ मर्यादा

पुरूषोत्तम भगवान राम के जीवन की प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना 'राम-रावण' युद्ध का प्रस्तुतिकरण करने जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि राम-रावण युद्ध साम्राज्यवादी, राज्य- विस्तारवादी अथवा निर्बल को सबल द्वारा दबाकर रखने और उसके दोहन न करने के लिए था।

राम-रावण युद्ध

लंका से सुदूर उत्तरी छोर पर बसे अयोध्या के राजा दशरथ द्वारा राम को 14 वर्ष- 'वनवास' का आदेश दिया गया। राम जानते थे कि उनके पिता अति निर्बल, स्त्रैण तथा भोग-विलास में तल्लीन रहने वाले हैं। चाहे सन्तान-प्राप्ति के लिए ही उन्होंने विवाह किये, परंतु वे अपनी वासनामयी प्रवृत्ति पर अंकुश न लगा सके। पिता जी की आज्ञा पालने हेतु प्रस्थान के समय धर्मपत्नी सीता तथा अनुज लक्ष्मण भी साथ गये। लक्ष्मण ने वन जाते समय अपनी धर्मपत्नी 'उर्मिला' की भावनाओं का भी ध्यान नहीं रखा परंतु वाह ! उर्मिला का भी क्या महान् त्याग था कि इस अमानवीय अत्याचार को भी सहा।

बालहठ, नारी हठ और राज हठ अपने दुष्परिणामों के कारण कुख्यात है प्रातः सायंकालीन संध्या करने के लिए उन्हें मृग-चर्म की आवश्यकता थी। झोपड़ी के निकट छद्मवेशी मारीचि का मृगरूप में विचरण तथा उसकी चमकती बहुरंगी खाल सीता को भा गई। बस, फिर क्या था, उन्हें 'नारी-हठ' का उन्माद चढ़ा और राम को उसे मारकर उसकी खाल लाने के लिए दुराग्रह कर बैठी। आगे क्या हुआ, विज्ञपाठक भली-भाँति जानते हैं।

राम-रावण युद्ध का दूसरा कारण दो विभिन्न संस्कृतियों का पारस्परिक संघर्ष था। उत्तर भारत में वैदिक आर्य संस्कृति तथा सुदूर दक्षिण भारत में 'रक्ष-संस्कृति' असुर संस्कृति का प्रचार-प्रसार था। आर्य संस्कृति के नायक भगवान राम तो असुर संस्कृति के अग्रणीनेता रावण और उसका लंका-राज्य/यह संघर्ष त्याग-वादी संस्कृति तथा भोगवादी संस्कृति के प्रचार-प्रसार का था।वीं शताब्दी में जो क्रांतियां हुई, वह भी साम्राज्यवादी तत्वों तथा समाजवादी- साम्यवादी सिद्धान्तों के आधार पर थी। इस प्रकार सांस्कृतिक- संघर्ष होते रहना यह संसार की नियति है।

सम्प्रति, भारत में भी रक्ष- संस्कृति, रावण सभ्यता तथा भोगवादी संस्कृति प्रेमी, जिनमें हमारे कुछ साम्यवादी तत्व प्रमुख हैं, आर्य वैदिक संस्कृति भगवान राम एवं उनकी वीरोचित स्मृतियों को मिटाने या भ्रष्ट करने की जिद्द करने लगी। इस राष्ट्र-घातकनीति का पूरे राष्ट्र में जोरदार विरोध हुआ। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने इस राम सेतु को तनिक भी हानि पहुँचाये बिना किसी अन्य विकल्प में आदेश केन्द्र सरकार को दिया। यह साम्यवादियों, नास्तिकों तथा मुस्लिम तुष्टिकरण के पक्षपाती तत्वों की सबसे बड़ी हार थी।

राम की संस्कृति, वैदिक आर्य संस्कृति की रक्षा करने की। हमारे देश में पिछले समय से 'भारतीय इतिहास' को बदलने की एक गुप्त योजना (षड्यंत्र) चल रही है। कहा जाता है कि सन् 1935-36 में कुछ मुस्लिम छात्र गांधीजी के पास गए। उन्होंने बी.ए. के हिन्दी पाठ्यक्रम में भूषण की कुछ कविताओं, छन्दों तथा व्यंग्यों को निकाल देने के लिए आग्रह किया। उनका कथन था कि 'तीन बेर खाती, ते वे तीर बेर खाती हैं। जो नगन जड़ाती ले वे नगन जड़ाती हैं।' 'ऐसी चुभती हुई पंक्तियां हम मुस्लिम छात्र-छात्राओं को बड़ी पीड़ा पहुँचाती है।' मुस्लिम तुष्टीकरण के मसीहा गांधीजी ने आगरा-विश्वविद्यालय के अधिकारियों से आग्रह कर वे पंक्तियां पाठ्यक्रम से हटवा दीं।

कुछ लोगों ने यहां तक दुस्साहस किया कि 'राम' एक कल्पना है। मनुष्य के मन में राम-रावण की तरह मंगल-अमंगल भावनाएँ, सतोगुणी-तमोगुणी प्रवृत्तियां उठती रहती हैं। इन्हें ही आधार बनाकर रामायण आदि काव्यों की रचना कवियों ने की है। यथार्थ में 'राम' का अस्तित्व कहीं होना नहीं पाया जाता।

आज इस अवसर पर हमें कृत-संकल्प होना है कि राम के अस्तित्व, जन्म, क्रियाकलाप, संस्कृति प्रसार, दुष्ट दमन आदि से हम प्रेरणा लें। अतः अपनी इस ऐतिहासिक अस्मिता की रक्षा करने के लिए हमें भगवान राम, भारतीय संस्कृति वेद और वैदिक-संस्कारों की रक्षा के लिए कटिबद्ध होना पड़ेगा। एक बार फिर सिंहनाद करते हुए कहो- भगवान राम की जय ! भारत माता की जय !!

- साभार - दिव्य वैदिक ज्ञान ज्योति

आर्य जगत की हल-चल

"आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली द्वारा संचालित आर्य स्त्री समाज (बहावलपुर) का सात दिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ"।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री एवं सहयोगी अनिल शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रवचन एवं भजन डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जी एवं आचार्य गवेन्द्र शास्त्री के हुए। मधुर भजन श्रीमती कविता आर्या के हुये। इस शुभ अवसर पर प्रधान अशोक सहगल, मंत्री नरेन्द्र मोहन वलेचा, कोषाध्यक्ष सतीश कुमार, सावित्री शर्मा, ललिता कुमार, आदर्श सहगल, जगदीश वधवा, राकेश दुरेजा, और सभी आर्यजन उपस्थित थे। प्रधाना अमृता आर्या जी ने मंच संचालन एवं आगन्तुक आर्यजनों का धन्यवाद किया। तथा ऋषि लंगर सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ।

निवेदक - मंत्राणी, जनक चुघ

आर्य समाज माडल टाउन दिल्ली का त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव अनेक प्रेरक कार्यक्रमों के साथ यज्ञ के ब्रह्म एवं वेदकथा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के हुऐं। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- श्री कृष्णदेव आर्य, मंत्री

आर्य समाज सुभाष नगर नई दिल्ली का त्रिदिवसीय वार्षिकात्सव सम्पन्न हुआ यज्ञ एवं वेद कथा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी थे भजन अंकित शास्त्री जी के हुए, ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-संजीव आर्य, संयोजक

आर्य समाज सान्ताक्रुज का 74वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह

शुक्रवार दिनांक 26.01.2018 से रविवार दिनांक 28.01.2018 तक आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का 74वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह आर्य समाज के विशाल सभागृह में मनाया गया। इस अवसर पर ऋग्वेद के मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञ प्रातः 8.00 बजे से 10.00 बजे तक आयोजित किया गया जिसके ब्रह्म आचार्य पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय (नई दिल्ली) एवं वेदपाठी पं. नामदेव आर्य, पं. विनोद कुमार शास्त्री, पं. नरेन्द्र शास्त्री एवं पं. प्रभारंजन पाठक थे।

विवेक यज्ञ पद्धति का विमोचन

नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नव विक्रम सवंत् 2075 एवं आर्य समाज स्थापना दिवस 18 मार्च रविवार 2018 को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् आर्य समाज के यशस्वी प्रधान एवं सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री अशोक सहगल द्वारा पुनप्रकाशित पुस्तक विवेक पद्धति के तृतीय संस्करण का विमोचन वैदिक विद्वान् आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में उपस्थित आर्य जनों ने इस पुण्य कार्य के लिए अशोक जी का धन्यवाद किया। प्रस्तुत पुस्तक संस्कृत हिन्दी तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं में होने के साथ साथ अनेक शुभावसरों से संबन्धित मन्त्रों से सशोभित है। इस लिए देश-विदेश में इसकी माँग हमेशा बनी रहती है। पुस्तक के प्रकाशन के लिए समारोह में उपस्थित आर्य जनों ने भी सहगल साहब को शुभ कामनाएं देते हुए उनके परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घायु की कामना की। जिससे वैदिक विचारधारा के प्रचार प्रसार का प्रसंग हमेशा बना रहे और वैदिक साहित्य की श्री वृद्धि होती रहे। इस अवसर पर सहगल परिवार की ओर से प्रसाद वितरण किया गया।

- मंत्री

प्रवेश सूचना

श्री देवतीर्थ गंगा गुरुकुल आश्रम (बृजघाट) का 2018-2019 का बालक और बालिकाओं का शैक्षणिक सत्र प्रारम्भ है। पञ्चम, षष्ठ, सप्तम और अष्ठम क्षेणी में प्रवेश परीक्षा हेतु 10 अप्रैल से 15 अप्रैल के मध्य आकर प्रवेश सुनिश्चित करें। गुरुकुल में शिक्षा-आवास-भोजन पूर्णतः निःशुल्क है। आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों के बच्चों को प्राथमिकता दी जायेगी। सम्पर्क करें।

आचार्य विकाश तिवारी
साधना आश्रम, बृजघाट
गढ़मुक्तेश्वर, जिला हापुड़
चलभाष 9968059239

गुरुमाता-उषा देवी जी
श्री देवतीर्थ गंगा गुरुकुल आश्रम (कन्या)
352, राम कुटीर, बृजघाट,
चलभाष : 9627143780

स्वः नेभराज आर्य जी की पावन पून्य स्मृति

जन्म नवम्बर 14, 1924 - मृत्यु 20 मार्च 2017

प्रेरणा श्रोत कर्मयोगी व्यक्तिव ज्यों ज्यों मार्च की 20 तारीख पास आती है, इक टीस सी मन में उठती है। आर्य साहब के साथ बिताये खट्टे-मीठे अनुभव, एक एक दृश्य बनकर सामने आने लगते है। सादा जीवन, उच्च विचार का पथिक, वैदिक विचारों से ओत-प्रात जीवन, कर्मयोग की भावना को लेकर आगे बढ़ने वाला व्यक्ति, न जाने कितनों को आर्य विचारों का सन्देश देकर प्रभु की समाधि में विलीन हो गया।

यह एक चिरतंन सत्य है, जो इस संसार में जन्मा है, उसे जाना है। कुछ लोग अपने सद-विचारो, कृत संकल्पों द्वारा इस मानव जीवन को सार्थक कर जाते हैं। आर्य साहब का जीवन कुछ ऐसा ही था। हिन्दुत्व की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी थी। सत्यार्थ प्रकाश द्वारा ऋषि का संदेश जन जन तक पहुँचाना उनके जीवन का लक्ष्य था। राजेन्द्र नगर आर्य समाज और बहावलपुर पंचायत के प्रधान पद को कई बार सुशोभित किया। समाज को उन्नति के पथ पर ले जाने में उनका काफी प्रयास रहा। अंग्रजी से हिन्दी की शब्दावली तैयार कराने में आर्य साहब का बड़ा योगदान रहा। सरकारी पद पर रहते हुए भी, गौ हत्या आन्दोलन में भाग लिया। ऐसे महान आत्मा को मेरा शत्-शत् प्रणाम।

-अमृत आर्या

भजन

हे परमेश्वर सत्, चित, आनंद।
तू विमल, मनोहर, तेजरूप ।
किस ने देखा तेरा स्वरुप ।।
तू सीमाओं में नहीं बंद ।
हे परमेश्वर सत्, चित, आनंद।

तू अति विशाल, तू अति महान।
फिर भी कण कण में विद्यमान ।।
तू बंधन में फिर भी स्वछंद ।
हे परमेश्वर सत्, चित, आनंद ।।

तेरी महिमा इतनी अपार ।
क्या गाए उस को गीतकार ।।
असमर्थ शब्द, असमर्थ छंद ।
हे परमेश्वर सत्, चित, आनंद ।।

– विजय अरूण मो. 9892785994

श्रद्धांजली

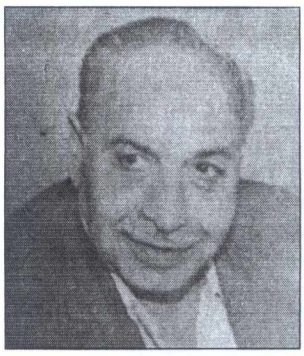

हमारे प्रेरणा स्रोत स्वर्गीय बलराज वोहरा जी आर्य समाज राजेन्द्र नगर क सदस्य का 1 मार्च 2018 को निधन हो गया। श्री बलराज वोहरा जी आर्य समाज के आधार स्तम्भ थे। श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली में हुई। जिसमें प्रधान अशोक सहगल, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री नरेन्द्र वलेचा, श्री सतीश मैहता सहित सभी समाज के सदस्यों पदाधिकारियों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

–भीष्म लाल

ओ३म्

ऋग्वेद ।। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।। यजुर्वेद

आर्य स्त्री समाज, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली
का

आर्य महिला सम्मेलन

शनिवार दिनांक 14 अप्रैल, 2018

आदरणीया और प्रिय बहनो ! प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्य स्त्री समाज राजेन्द्रनगर, **नई दिल्ली का 66वां वार्षिकोत्सव, श्रीमती उमा बजाज की अध्यक्षता में मनाया जा रहा** है। इस स्वर्णिय अवसर का लाभ उठाने हेतु, आप सभी बहनें, सादर आमंत्रित हैं, अतः अधिक से अधिक, संख्या में पधारें, मनुष्य जीवन को सार्थक बनायें।

कार्यक्रम :

समय – दोपहर 1:30 बजे से 5:30 बजे तक

यज्ञ ब्रह्मा	:	**श्रीमती इन्द्रा शर्मा जी (मंडल प्रधाना)**
ध्वजारोहण	:	**श्रीमती सुशीला ग्रोवर एवं सुदर्शन राय जी।**
ध्वजगान	:	**आर्य समाज की बहनों द्वारा**
ओ३म् संकीर्तन	:	सभी बहनों का सहयोग
मुख्य अतिथि	:	श्रीमती चित्रा नाकरा जी, प्रधानाचार्या वेद व्यास (डी.ए.वी. स्कूल)
स्वागतगान, भजन	:	आर्य समाज राजेन्द्र नगर की बहनों द्वारा।
मुख्य वक्ता	:	आचार्या आयुषी शास्त्री जी *(विषय : पारिवारिक जीवन में सुख शान्ति का मार्ग)*
विशिष्ट अतिथि	:	श्रीमती शशि प्रभा आर्या, श्रीमती प्रकाश कथूरिया (प्रा. म. स. की प्रधाना) श्रीमती प्रेमलता भटनागर, श्रीमती रचना आहुजा, (अ.प्रा.म.स. की महामंत्राणी) श्रीमती कृष्णा चड्ढा, (अ.प्रा.म.स. की कोषाध्यक्षा)
विशेष आमंत्रित	:	सीमा उपाध्याय, सुधा वर्मा, द्रौपदी नारंग, निरुपमापुरी, तारा शर्मा, शशि मल्होत्रा, सुनीता बुग्गा, प्रोमिला घई, सुषमा सेठ, कृष्णा ठुकराल, **अल्पना शर्मा**, विद्या सचदेवा, उर्मिला आर्या, सुशीला टंडन, सरोज नैय्यर
अध्यक्षीय भाषण	:	श्रीमती उमा बजाज
शुभकामनाऐं	:	श्रीमती कान्ता आर्या, सुधा उपाध्याय
धन्यवाद	:	प्रधाना सावित्री शर्मा

शान्ति पाठ एवं प्रसाद वितरण

निवेदकः

आर्य स्त्री समाज	*आर्य स्त्री समाज बहावलपुर*	*आर्य महिला आश्रम*
प्रधाना : **श्रीमती सावित्री शर्मा**	प्रधाना : श्रीमती अमृत आर्या	प्रधाना : श्रीमती आदर्श सहगल
मंत्राणी : श्रीमती ललिता कुमार	मंत्राणी : श्रीमती जनक चुघ	मंत्राणी : श्रीमती जगदीश दुधवा

सामवेद अथर्ववेद

आर्य प्रेरणा सम्बन्धी घोषणा

फार्म–4 (नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशन का स्थान	: दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: नरेन्द्र मोहन वलेचा
4.	क्या भारत का नागरिक है	: हाँ
5.	मुद्रक का पता	: आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली–60
6.	प्रकाशक का नाम	: नरेन्द्र मोहन वलेचा
7.	क्या भारत का नागरिक है	: हाँ
8.	प्रकाशक का पता	: आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–60
9.	सम्पादक का नाम	: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
10.	क्या भारत का नागरिक है	: हाँ
	सम्पादक का पता, उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–60

मैं नरेन्द्र मोहन वलेचा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

नरेन्द्र मोहन वलेचा

दिनांक 01.04.2018 **प्रकाशक**

R.N. DEL BIL/2007/22120
DL (C)-14/1181/2011-2013

Date of Posting 12 & 13, at S.R.T. Nagar, Post Office, ND-55

ओ३म्

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

हे प्रभो! आप हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलें।

आर्यसमाज राजेन्द्रनगर

नई दिल्ली –110060 का

66वां वार्षिकोत्सव

शनिवार 14 अप्रैल 2018 से
रविवार 22 अप्रैल 2018 तक

सामवेदीय बृहद् यज्ञ | **भजन** | **प्रवचन**

महिला सम्मेलन | **बाल सम्मेलन**

आपके व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं राष्ट्रीय सुख समृद्धि व कल्याण के विचारों को केन्द्र में रखते हुए प्रेरणादायक सरल व्याख्यान एवं भक्ति संगीत की शृंखला का आयोजन किया जा रहा है। इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाने तथा दुर्लभ मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने हेतु

आप इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं !

–: निवेदकः–

अशोक सहगल (प्रधान) नरेन्द्र वलेचा (मन्त्री) आर्य समाज राजेन्द्र नगर

सावित्री शर्मा (प्रधाना) ललिता कुमार (मन्त्राणी) आर्य स्त्री समाज, राजेन्द्र नगर

अमृत आर्या (प्रधाना) जनक चुघ (मन्त्राणी) आर्य स्त्री समाज (बहावलपुर) राजेन्द्र नगर

आदर्श सहगल (प्रधाना) जगदीश वधवा (मन्त्राणी) आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर

एवं समस्त सदस्य गण

बाल सम्मेलन कार्यक्रम : रविवार 15 अप्रैल 2018

विषय वस्तुः आओ स्वच्छ एवं स्वस्थ भारत बनायें

प्रातः 7 बजे	: पंजीकरण सभी प्रतियोगीयों द्वारा
प्रातः 8 बजे	: बच्चों द्वारा सामूहिक यज्ञ
प्रातः 8:30 बजे	: उद्घाटन एवं ध्वजारोहण (विशिष्ठ अतिथियों द्वारा) प्रसाद वितरण
मुख्य अतिथि	: माननीय श्री मोती लाल जी (बीकानेर वाला – करोल बाग)
विशिष्ट अतिथि	: माननीया श्रीमती किरन नन्दा जी (K.M.C.S.)
	: माननीया श्रीमती चन्दा देवी (बीकानेर वाला – राजौरी गार्डन)
	: माननीया श्रीमती सरिता जैन (B.K. Jain Diagnostics)
	: माननीया श्रीमती ममता अग्रवाल (Ex. प्रेसिडेंट रोटरी शक्ति)
	: माननीया श्रीमती :– रजनी नाकरा एवं प्रभा चिचड़ा
	– प्रतियोगीताएँ –
1. प्रातः 9 से 10 बजे तक	: चित्र कला प्रतियोगिता (3 वर्गों में) कक्षा 8 तक के विद्यार्थियों के लिए) (स्व. विवेक सहगल की स्मृति में श्रीमती सुनीता जी एवं श्री अशोक सहगल जी के सौजन्य से) (प्रतियोगी कलर एवं ड्राइंग बोर्ड स्वयं लेकर आयें)
2. प्रातः 9 से 10 बजे तक	: भाषण प्रतियोगिता (कक्षा 9 वी से 12 वी तक के विद्यार्थियों के लिए) (समय 5 मिनट) विषय : स्वच्छता से ही स्वस्थ भारत का निर्माण संम्भव है। (शिक्षाविद् स्व. श्री सदानन्द चुघ जी की स्मृति में चुघ परिवार के सौजन्य से)
3. प्रातः 10 से 11 बजे तक	: देशभक्ति गीत प्रतियोगिता (समय 5 मिनट) फिल्मी गीत प्रतियोगिता मे सम्मिलित नहीं किये जायेंगे (स्व. श्रीमती राज लाल जी की स्मृति में माननीय श्री सतीश कुमार जी कोषाध्यक्ष द्वारा)
4. प्रातः 11 से 12 बजे तक	: मौखिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता (5वी कक्षा से लेकर 12 वी तक के विद्यार्थी – 2 ग्रुपों में) *(On the Spot Prizes Shall be given)* (स्वः नेभराज आर्य जी की स्मृति में श्री सुनील आर्य जी के सौजन्य से)
दोपहर 12:30 बजे	: अल्पाहार वितरण
सौजन्य से	: माननीय श्री मोतीलाल जी (आगनं एवं बीकानेर वाला करोल बाग, नई दिल्ली)

परामर्शदात्री	संयोजक	सह–संयोजिका	
श्रीमती उमा बजाज	सुरेश चुघ	श्रीमती आदर्श सहगल एवं श्रीमती सोनिया सिंह	
श्रीमती सावित्री शर्मा (प्रधाना)	9811167514	9266101941	8851708276

पारितोषिक वितरण 22 अप्रैल रविवार 2018 समयः 11:00 बजे

नोट : अधिक जानकारी के लिए श्री अनिल जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर दूरभाष नं. 25760006 पर सम्पर्क करें।

दैनिक कार्यक्रम

(सोमवार 16 अप्रैल से रविवार 22 अप्रैल तक)

प्रातः कालीन सत्र

सामवेदीय बृहद् यज्ञ

प्रातः 6.15 से 8.00 बजे तक

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी

वेद पाठी : आर्य समाज राजेन्द्र नगर के ब्रह्मचारीगण

सायंकालीन सत्र

(16 अप्रैल सोमवार से 21 अप्रैल शनिवार तक)

भजन : सायं 7.00 से 8.00 बजे तक
श्री भानुप्रकाश शास्त्री जी

वेद प्रवचन : रात्रि 8.00 से 9.00 बजे तक
16, अप्रैल से 22 अप्रैल तक
: आचार्य सोमदेव जी (अजमेर)

सायंकालीन प्रवचनों के विषय

सोमवार 16 अप्रैल 2018	सत्संग की महिमा
मंगलवार 17 अप्रैल 2018	सुख–शांति का मार्ग एवं तनाव मुक्ति के उपाय
बुधवार 18 अप्रैल 2018	संस्कारो की उपयोगिता मानव सेवा
गुरुवार 19 अप्रैल 2018	योग से विश्व में शांति एवं आनन्द की प्राप्ति
शुक्रवार 20 अप्रैल 2018	मानव जीवन पर कर्म का प्रभाव
शनिवार 21 अप्रैल 2018	ईश्वर की भक्ति उपासना कैसे करें

प्रतिदिन रात्रि वेद प्रवचन के पश्चात् प्रीतिभोज की व्यवस्था है।

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह

रविवार 22 अप्रैल 2018

यज्ञ पूर्णाहुति	: प्रातः 8:00 से 9:00 बजे तक
ध्वजारोहण	: 9:00 से 9:15 तक
जलपान	: 9:15 से 9:30 तक
भजन	: 9:30 से 10:00 तक

विशेष कार्यक्रम

समय : 10:00 से 12:00 बजे तक

अध्यक्षता	: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी
मुख्य वक्ता	: आचार्य सोमदेव जी
मुख्य अतिथि	: श्रीमती चन्दा एवं श्री किशन बीकानेरी (बीकानेरवाला, राजौरी गार्डन)
विशिष्ट अतिथि	: माननीया श्रीमती ममता एवं डॉ. नीरज अग्रवाल जी (गोपीनाथ हॉस्पीटल, भिवाड़ी)
संयोजक	: श्री नरेन्द्र वलेचा जी
सह–संयोजक	: श्री सुरेश चुघ जी
पारितोषिक वितरण	: 11:00 बजे से 11:30 बजे तक
धन्यवाद, शान्तिपाठ	: श्री अशोक सहगल जी
ऋषी लंगर	: 12:30 बजे
सौजन्य से	: श्री बद्रीनाथ बजाज मेमोरियल ट्रस्ट, श्रीमती उमा बजाज जी, श्री राजकुमार बजाज जी एवं परिवार द्वारा

महिला सम्मेलन

14 अप्रैल शनिवार 2018 दोपहर 1:30 बजे से सायं 5:30 बजे तक
(कार्यक्रम पृथक् प्रकाशित)

Printed and published by **Sh. N.M. Walecha** Secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Gurmat Printing Press, 1337, Sangatrashan, Pahar Ganj, New Delhi-55 Ph. : 23561625 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. ***Editor :*** **Achariya Gavende Sastri**